दिगंत

ई-पत्रिका:जनवरी २०२०

‘नैक’ प्रत्यायित

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय

सिविल लाइन्स, गोरखपुर

website : www.dnpgcollege.edu.in

दिगंत- ई-पत्रिका:जनवरी 2020

मुख्य संरक्षक :- परमपूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज

संरक्षक मण्डल:–

1. **प्रोफेसर उदय प्रताप सिंह,अध्यक्ष महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, गोरखपुर**

2. **श्री धर्मेन्द नाथ वर्मा, उपाध्यक्ष महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद, गोरखपुर**

प्रधान सम्पादक :- डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह, प्राचार्य

सम्पादन समिति:–

1. **डॉ. शैलेश कुमार सिंह,** असिस्टेन्ट प्रोफेसर,राजनीति विज्ञान विभाग

2. **डॉ. प्रियंका सिंह,** असिस्टेन्ट प्रोफेसर,राजनीति विज्ञान विभाग

3. **डॉ. समृद्धि सिंह,** असिस्टेन्ट प्रोफेसर,समाजशास्त्र विभाग

4. **डॉ. सुभाष चन्द्र,** असिस्टेन्ट प्रोफेसर,बी.एड विभाग

5. **डॉ. सुनील कुमार सिंह,** असिस्टेन्ट प्रोफेसर,समाजशास्त्र विभाग

प्राचार्य की कलम से.........

मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज जी की 125 वीं व राष्ट्र संत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी के 100 वीं जंयती वर्ष के अति विशिष्ट अवसर पर ई– पत्रिका 'दिगंत' का प्रकाशन महाविद्यालय प्रारम्भ कर रहा है। हमारी संस्था विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास तथा शैक्षिक पुनर्जागरण के पथ पर निरंतर गतिशील है। मेरा मानना है कि शिक्षा वह प्रकाशपुंज है जिसके आलोक में व्यक्ति और समाज आलोकित होते हुए राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देने में समर्थ हो पाते हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सन–1932 में श्री गोरक्षपीठ के तत्कालीन महंत युगपुरुष दिग्विजय नाथ जी महाराज द्वारा 'महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद' की स्थापना की गई, जो राष्ट्र–संत महंत अवेद्यनाथ जी की छत्रछाया में पल्लवित–पुष्पित होती रही तथा वर्तमान समय में हमारे परम पूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज के मार्गदर्शन में विकास के नित नए आयाम सृजित कर रही है। इसी मातृ संस्था के एक महत्वपूर्ण अनुषंग के रूप में सन् 1969 में दिग्विजयनाथ कॉलेज की स्थापना हुई। विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए यह संस्था निरन्तर अकादमिक, सामाजिक एवं बौद्धिक कार्यक्रम संपादित करती रहती है। इसके साथ ही समय–समय पर संस्था अपने पुरातन छात्रों एवं अभिभावकों के सुझाव और सहयोग से विभिन्न कार्यक्रम भी आयोजित करती है। संस्था के लक्ष्य अपने संस्थापकों की शैक्षिक पुनर्जागरण की संकल्पना को पूर्ण करना व राष्ट्रसेवी युवाओं को तैयार करना है। इसके लिए हमने विद्यार्थियों के साथ ही प्राध्यापकों कर्मचारियों के लिए अनुकूल वातावरण तथा स्वस्थ–स्वच्छ परिसर की कल्पना को भी मूर्त किया है। हमारी ई–पत्रिका 'दिगंत' शैक्षिक व शिक्षणेतर गतिविधियों को समाज के समक्ष उद्घाटित करने में सफल और सार्थक सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह
प्राचार्य

वनस्पति विज्ञान विभाग के तत्वावधान में वानस्पतिक उद्यान की स्थापना

06 जनवरी 2020, को महाविद्यालय परिसर में वनस्पति विज्ञान विभाग व विज्ञान क्लब के सौजन्य से 'हर्बल गार्डेन' का शुभारम्भ हुआ तथा हर्बल पौधों का बीजारोपण किया गया। उक्त अवसर पर वनस्पति विज्ञान विभाग के 'हर्बल गार्डेन' के प्रभारी डॉ. परीक्षित सिंह व विज्ञान क्लब प्रभारी श्री धर्मचन्द विश्वकर्मा सहित विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे।

क्षेत्रीय सेवा योजन कार्यालय एवं कैरियर काउंसिलिंग के तत्वावधान में एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन

6 जनवरी 2020, को महाविद्यालय में क्षेत्रीय सेवा योजन कार्यालय गोरखपुर एवं कैरियर काउंसिलिंग केन्द्र दिग्विजयनाथ पी.जी. कॉलेज, गोरखपुर के संयुक्त तत्वावधान में एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गोरखपुर के क्षेत्रीय सेवा योजन कार्यालय के श्री राहुल श्रीवास्तव ने छात्रों को विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे–बैंकिंग, आई.ए.एस., पी.सी.एस. में सी–सैट, रीजनिंग जैसे प्रारूपों से अवगत कराते हुए कहा कि यह एक श्रमसाध्य कार्य अवश्य है जिसके लिए समय की अनिवार्यता तथा साथ ही एक निश्चित कार्ययोजना को लेकर चलना होगा और स्वयं को एक संकल्पित साधक के रूप में लगाना होगा, तभी लक्ष्य की प्राप्ति संभव होगी। इसके लिए उन्होंने कुशल मार्गदर्शन को भी आवश्यक बताया।

सेवायोजन कार्यालय के अन्य सदस्य श्री पंकज पाठक, अरविन्द कुमार सिंह व अविनाश कुमार सिंह ने भी अपने विचार रखे।

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के तत्वावधान में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

10 जनवरी 2020, को रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के तत्वावधान में एक कार्यशाला का आयोजन हुआ, जिसका विषय ''संविधान के अनुच्छेद–370 व 35–ए के निरस्तीकरण के पश्चात जम्मू–कश्मीर का बदलता परिदृश्य'' था। जिसमें मुख्य अतिथि महाविद्यालय भटवली बाजार (उनवल), गोरखपुर के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के सहयुक्त आचार्य डॉ. बलवान सिंह थे। उन्होने अपने विचार रखते हुए कहा कि यह अनुच्छेद भारत के माथे पर एक ऐसा कलंक था, जिसे भारतीयों ने 70 वर्षों तक झेला। ऐसे प्रावधानों को समाप्त कर आने वाले दिनों में वृहत्तर भारत की संकल्पना साकार होगी। इससे कश्मीर में चतुर्दिक विकास की धारा बहेगी और अपने

प्राकृतिक संसाधनों के बल पर यह क्षेत्र पुनः भारत का स्वर्ग सिद्ध होगा।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर हर्ष कुमार सिन्हा, आचार्य, रक्षा अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय थे। उक्त विषय पर उन्होंने अपने विचार रखते हुए वर्तमान भारत में 'अनुच्छेद 370 व 35ए के निरस्तीकरण' की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 370 व 35ए की पृष्ठभूमि पूरी तरह से ऐतिहासिक है। भारत की कल्पना कश्मीर से कन्याकुमारी तक थी और कश्मीर भारत की ऐसा सुगंध थी जिसे हम अनुभव तो कर सकते थे लेकिन कतिपय राजनीतिक कारणों से उसे छू नहीं सकते थे। किन्तु वर्तमान दृढ़ इच्छाशक्ति वाली सरकार ने इसका सुधार कर सही अर्थों में कश्मीर से कन्याकुमारी तक के भारत के सपनों को साकार किया। इससे अब कश्मीर में विकास के नये पटल खुलेंगे, उद्योग–धंधे और रोजगार के नये अवसर प्राप्त होंगे और एक नये कश्मीर की संकल्पना चरितार्थ होगी।

युवा सप्ताह के अन्तर्गत संगोष्ठी का आयोजन

13.01.2020 को बी.एड. विभाग युवा सप्ताह के अवसर पर लाइफ एण्ड टीचिंग आफ स्वामी विवेकानन्द विषय पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मॉ सरस्वती की एवं स्वामी विवेकानन्द जी के चित्र पर दीप प्रज्जवलन एवं माल्यापर्ण तथा पुष्पांजलि द्वारा हुआ। तत्पश्चात छात्र–छात्राओं द्वारा स्वामी जी के व्यक्तित्व, कृतित्व, शिक्षादर्शन एवं उनके जीवन से जुड़े संस्मरण एवं प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत किये गये। छात्र–छात्राओं में ज्ञानेन्द्र राय, सुकृति पाण्डेय, प्रिया पाण्डेय तथा राहुल कुमार ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के अन्त में बी.एड. विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. राजशरण शाही जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि स्वामी विवेकानन्द जी ने किस प्रकार आत्मबोध से राष्ट्रबोध की यात्रा तय की। इसके बारे में विस्तार से छात्र–छात्राओं को बताते हुए अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करते हुए उसे प्राप्त करने हेतु संकल्पशील रहने हेतु प्रेरित किया।

राजनीति विज्ञान के तत्वावधान में एकदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन

22 जनवरी 2020 को राजनीति विज्ञान विभाग के तत्वावधान में **'21वीं सदी में गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता'** विषय पर एकदिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री महेन्द्र कुमार सिंह, सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री विवेक कुमार शुक्ल, राजनीति विज्ञान विभाग, सहायक आचार्य, सी.आर.डी आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, गोरखपुर रहे। तकनीकी सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. अमित उपाध्याय, सहायक आचार्य, राजनीतिक विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग की अध्यक्ष डॉ. वीणा गोपाल मिश्र ने की। उक्त अवसर पर महाविद्यालय के एम.ए. राजनीति विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों द्वारा अपने–अपने आलेख भी प्रस्तुत किये।

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती पर महाविद्यालय में कार्यक्रम आयोजित

23 जनवरी 2020, को राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती के अवसर पर महाविद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने सुभाष बाबू के जीवन से छात्र–छात्राओं को प्रेरणा लेने की बात कहते हुए बताया कि देश प्रेम सर्वोपरि है तथा इस प्रसिद्ध कथन को भी दोहराया कि **जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।**

राष्ट्रीय सेवा योजना के वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी डॉ. रवीन्द्र कुमार ने सुभाष बाबू के संघर्षों पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला तथा विज्ञान संकाय के डॉ. परीक्षित कुमार सिंह ने सुभाष चन्द्र के 'जय हिन्द' एवं 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा' वाक्यों की व्यापक अर्थवत्ता से स्वयंसेवियों को परिचित कराया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा **''लैंगिक असमानता हमारे समाज को प्रगति से कैसे रोकती है''** विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें आयुषी कुमारी, श्रेया श्रीवास्तव एवं राज वर्मा को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

वनस्पति विज्ञान विभाग एवं विज्ञान क्लब के संयुक्त तत्वावधान में विशिष्ट व्याख्यान व कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 25 जनवरी 2020 को वनस्पति विज्ञान विभाग एवं विज्ञान क्लब के संयुक्त तत्वावधान में **'जैव–विविधता व ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन'** विषय पर विशिष्ट व्याख्यान व कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रो. एस.सी. त्रिपाठी, पूर्व विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने कहा कि पर्यावरण में जीवन के जितने स्वरूप हैं तथा जीवों के बीच पाये जाने वाली विभिन्नताओं को जो उन्हें विभिन्न प्रजातियों से अलग करती है उसे ही जैव विविधता कहते हैं। सर्वप्रथम इसका प्रयोग वाल्टर जी. रॉसन ने किया था।

उन्होंने अपशिष्ट प्रबन्धन के विषय में कहा कि प्रबन्धन का सम्बन्ध उनके व्यापक उपयोग के साथ–साथ उनकी गुणवत्ता पर भी निर्भर करता है। चूँकि यह मानव सभ्यता के विकास का स्तम्भ है इसलिए इसका प्रबन्धन भी अति आवश्यक है। इसका प्रबन्धन उस रूप में होना चाहिए जिससे पर्यावरण को कम से कम क्षति पहुँचे क्योंकि यह पारस्थितिक तंत्र को संतुलित बनाये रखने में सहायक होती हैं। अतः प्रकृति को नष्ट होने से बचाने के लिए जैव विविधताओं का संरक्षण अति–आवश्यक है।

गणतंत्र दिवस की पूर्वसंध्या पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 25 जनवरी 2020 को 71वें गणतंत्र दिवस की पूर्वसंध्या पर महाविद्यालय के सांस्कृतिक प्रकोष्ठ तथा महिला छात्रावास के संयुक्त तत्वावधान में देश–भक्ति पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने छात्र/छात्राओं को राष्ट्रीयता व राष्ट्रधर्म पर आधारित कार्यक्रमों की प्रस्तुति के लिए उनकी सराहना करते हुए नये भारत के निर्माण में उनके सक्रिय भागीदारी हेतु आह्वान किया और कहा कि यही वह शुभ अवसर है जब हमने एक लम्बे संघर्ष के बाद अंग्रेजों की दासता से मुक्त होकर भारत में एक नये गणतंत्र की स्थापना की तथा विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में स्थापित हुए। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये।

गोरक्षनाथ मन्दिर में एन.एस.एस.की स्वयंसेविकाओं का श्रद्धालुओं को सहयोग

26 जनवरी 2020 को दिग्विजयनाथ पी.जी. कॉलेज गोरखपुर, में राष्ट्रीय सेवा योजना के गोरक्षनाथ इकाई की स्वयंसेविकाओं द्वारा गोरखनाथ मन्दिर पर आने वाले श्रद्धालुओं को व्यवस्थित एवं कतारबद्ध करते हुए गोरक्षनाथ जी के दर्शन में लोगों को सहयोग प्रदान किया। इस अवसर पर अनेक वृद्धों तथा अशक्तों को स्वयंसेविकाओं ने सहयोग करके उनके आराध्य गुरू गोरक्षनाथ का दर्शन कराया।

शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा 'योग एवं समग्र स्वास्थ्य' विषय पर सप्तदिवसीय कार्यशाला का आयोजन

शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा 'योग एवं समग्र स्वास्थ्य' विषय पर दिनांक 27.01.2020 से 02.02.2020 तक सप्तदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. अनुराधा शुक्ल समन्वयक, पूर्वी क्षेत्र, आई.एफ.वाई.पी. तथा उपाध्यक्ष योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने कहा कि योग–प्रणेता महर्षि पतन्जलि ने योग को केवल मोक्ष का मार्ग ही नहीं बल्कि एक स्वस्थ और दीर्घ जीवन का सर्वोत्तम साधन माना है, क्योंकि योग की समस्त क्रियाएँ आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा ये सभी विधियाँ मानव के शरीर के साथ–साथ हृदय को भी सबल बनाती हैं तथा इन्हें असाध्य और जटिल बीमारियों से मुक्त रखती हैं। इन्होंने योग की अनेक विधाओं को प्रस्तुत कर प्रतिभागियों को उसकी महत्ता के विषय में विस्तृत रूप से जानकारी दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। कार्यक्रम का संचालन क्रीड़ा अधीक्षक श्री अवधेश कुमार शुक्ल ने तथा आभार ज्ञापन बी.एड. विभाग के सहयुक्त आचार्य डॉ. राजशरण शाही ने किया।

उक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत महाविद्यालय के 183 छात्र–छात्राओं ने पंजीकरण कराया। सप्तदिवसीय कार्यशाला में प्रत्येक दिन विभिन्न योगपरक कार्यक्रमों का आयोजन रखा गया।

सप्तदिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन ए.एस.पी.यू.एस. कालेज प्रयागराज के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. संजय कुमार सिंह ने एक्यूप्रेशर एवं स्वास्थ्य विषय पर बोलते हुए कहा कि यह एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है जो शरीर के बाह्य अंगों के साथ–साथ आंतरिक अंगों को भी स्वस्थ एवं निरोग रखता है तथा शरीर में होने वाले जोड़ों के दर्द की रोकथाम करता है तथा पाचनक्रिया को नियंत्रित कर मानव को स्वस्थ रखने में सहयोग प्रदान करता है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने अतिथि का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन क्रीड़ा अधीक्षक श्री अवधेश कुमार शुक्ल ने तथा आभार ज्ञापन बी.एड. विभाग से सहायक आचार्य डॉ. सुभाष चन्द्र ने किया।

कार्यशाला के तृतीय दिवस 29.01.2020, बुधवार को प्रथम तकनीकी सत्र में डॉ. अश्वनी राय (एसोसिएट प्रोफेसर, पटना होमियोपैथिक कालेज, पटना) ने 'प्राकृतिक चिकित्सा, योग एवम स्वास्थ्य' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने स्वास्थ्य में योग की महत्ता, प्राकृतिक चिकित्सा की पद्वति तथा योग के द्वारा पूर्णता को प्राप्त करने के बारे में बताया। कार्यशाला के द्वितीय तकनीकी सत्र में प्रतिभागियों से सूक्ष्म व्यायाम, योग तथा पवनमुक्त आसन के भाग–1 एवम् भाग–2 के विभिन्न आसनों का अभ्यास कराया गया। शांति पाठ के द्वारा कार्यशाला के तृतीय दिवस का समापन किया गया। मुख्य अतिथि का स्वागत डॉ. राजशरण शाही ने किया। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री अवधेश कुमार शुक्ल ने किया। कार्यशाला में बी.एड. तथा स्नातक एवम् परास्नातक के छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

'योग एवं समग्र स्वास्थ्य' विषय पर आयोजित सप्तदिवसीय कार्यशाला (27.01.2020 से 02.02.2020) के पॉचवे दिन प्रथम तकनीकी सत्र में डॉ. विनीत कुमार शर्मा (योग एवं प्राकृतिक चिकित्सक) ने योग एवं स्वास्थ्य विषय पर अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि योग व प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति मनुष्य को अंग्रेजी दवाओं के दुष्प्रभाव से बचाता है। उन्होंने योग के चरणों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने षट्कर्म के साथ–साथ सत् आहार लेने के बारे में कहा। कार्यशाला के द्वितीय तकनीकी सत्र में

श्री अवधेश कुमार शुक्ल जी ने छात्रों से पवन मुक्तासन भाग 1, भाग 2, भाग 3 का अभ्यास कराने के बाद विभिन्न आसन जैसे–ताड़ासन, सूर्यनमस्कार, चक्रासन, चन्द्रनमस्कार, प्रज्ञायोग, चिन, चिनमय आदि एवं बह्म मुद्रा का अभ्यास कराया गया। प्राणायाम में भस्त्रिका, नाड़ी शोधन का भी अभ्यास कराया गया। कार्यशाला के पंचम दिवस का समापन शांति पाठ के द्वारा हुआ। मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने प्रतिभागियों से कहा कि वे योग की शिक्षा को अपने जीवन में उतारें और एक स्वस्थ जीवन जीते हुए देश की प्रगति में अपना योगदान दें।

प्राचीन इतिहास व संस्कृति विभाग के तत्वावधान में एकदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक 28.01.2020 को प्राचीन इतिहास व पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग द्वारा एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका विषय''प्राचीन भारतीय वांग्मय में नारी विमर्श'' था। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. विपुला दुबे, आचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर ने कहा कि वांग्मय एक अथाह सागर के समान है, जिसमें महिलाओं द्वारा किये गये विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक कार्यों में जो त्याग किया उसका विस्तृत उल्लेख हुआ है। ऋग्वैदिक काल तो निश्चित रूप से नारी उत्थान का स्वर्णिम काल था। शिक्षा के क्षेत्र में तो इनका योगदान उस काल की मैत्रेयी, घोषा, अपाला, लोपामुद्रा जैसी विदुषियाँ हुई जिन्हें ऋषिकायें कहा गया। प्रशासन, वाणिज्य, व्यापार, उद्योग–धंधे आदि में भी पुरुषों का समान रूप से सहयोग करती थीं। उत्तरवैदिक काल और पूर्व मध्यकाल में नारियों की स्थिति में परिवर्तन होता है, जिससे कुछ विकृतियॉ आयीं जिसके कारण बालविवाह, पर्दाप्रथा तथा सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं का प्रचलन हुआ, जिससे नारी शिक्षा सर्वाधिक प्रभावित हुई। प्राचीन वाग्मय में स्त्रियों की स्थिति विविधता

से भरी थी लेकिन फिर भी इस काल की महिलाओं ने ज्ञान और प्रतिभा के बल पर समाज को समुन्नत किया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने अतिथि को स्मृति चिन्ह और उत्तरीय प्रदान कर किया, विषय प्रवर्तन विभागाध्यक्ष डॉ. धीरेन्द्र सिंह ने किया। संचालन श्री सुरेन्द्र चौहान ने तथा आभार ज्ञापन डॉ. कामिनी सिंह ने किया।

बसंत पंचमी के पावन अवसर पर महाविद्यालय में सरस्वती पूजन का आयोजित

30 जनवरी को बंसत पंचमी के शुभ अवसर पर बी.एड. विभाग में माॅ सरस्वती की पूजा का आयोजन किया गया। बी.एड. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के समस्त छात्र–छात्राओं ने सरस्वती पूजन किया। सरस्वती पूजन कार्यक्रम में डॉ. अरूण कुमार तिवारी, डॉ. गीता सिंह, डॉ. सरोज शाही, डॉ. राज शरण शाही, डॉ.सुभाष चन्द्र तथा महाविद्यालय के अन्य प्राध्यापक व कर्मचारी सम्मिलित हुए।

महाविद्यालय में विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा –2020

दिनांक 31 जनवरी 2020 से महाविद्यालय में विश्वविद्यालय पूर्व परीक्षा प्रारम्भ हुई, जिसमें B.A, M.A, B.Sc, M.Sc, B.Com, M.Com के विद्यार्थियों ने भाग लिया।